

# अथर्ववेद

काण्ड २

सूक्त १६

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Atharvaveda

Kaanda 2

Sookta 16

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में हमारी सभी इन्द्रियों में क्रिया व शक्ति बनी रहने के लिए प्रार्थना है।

प्रथम मन्त्र में हमारे श्वास तन्त्र में शक्ति बने रहने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। प्राणापानौ देवते। ११ अक्षराणि। एकपदाऽऽसुरी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

**प्राणापानौ मृत्योर्मा पातुं स्वाहा ॥१॥**

अथर्व २:३:१६:१

प्राणापानौ। मृत्योः। मा। पातम्। स्वाहा (सु-आह-आ) ॥१॥

हे (प्राण-अपानौ) प्राण और अपान वायु! (मृत्योः) मृत्यु से (मा) मेरी (पातम्) रक्षा करो। यह (सु) शुभ (आह) वचन मेरी वाणी में (आ) सदा बना रहे।

दूसरे मन्त्र में हमारे कानों में शक्ति बने रहने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। द्यावापृथिवी देवते। १४ अक्षराणि। एकपदाऽऽसुर्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः।

**द्यावापृथिवी उपश्रुत्या मा पातुं स्वाहा ॥२॥**

अथर्व २:३:१६:२

द्यावापृथिवी इति। उपश्रुत्या। मा। पातम्। स्वाहा ॥२॥

हे (द्यावा) द्युलोक और (पृथिवी) पृथिवी लोक के अन्तराल में स्थित वायु व दिशाओं! मुझे (उपश्रुत्या) श्रवणशक्ति दे (मा) मेरी (पातम्) रक्षा करो। यह (सु) शुभ (आह) वचन मेरी वाणी में (आ) सदा बना रहे।

तीसरे मन्त्र में हमारी आँखों में शक्ति बने रहने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। सूर्यो देवता। १० अक्षराणि। एकपदाऽऽसुरी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

**सूर्य चक्षुषा मा पाहि स्वाहा ॥३॥**

अथर्व २:३:१६:३

सूर्य। चक्षुषा। मा। पाहि। स्वाहा ॥३॥

हे (सूर्य) सूर्य! अपने प्रकाश से मुझे (चक्षुषा) दर्शन शक्ति दे (मा) मेरी (पाहि) रक्षा करो। यह (सु) शुभ (आह) वचन मेरी वाणी में (आ) सदा बना रहे।

चौथे मन्त्र में हमारी सभी इन्द्रियों में शक्ति बने रहने के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। अग्निदेवता। १५ अक्षराणि। द्विपदाऽऽसुरी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

**अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा देवैः पाहि स्वाहा ॥४॥**

अथर्व २:३:१६:४

अग्ने। वैश्वानर। विश्वैः। मा। देवैः। पाहि। स्वाहा ॥४॥

Synopsis

**This composition contains prayers for life long vigor, vitality and functioning of our sensory organs.**

In the first mantra the sage offers prayers for the proper functioning of our respiratory system.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devate** praaṇaapaanau, **vowels** 11, **chhandah** ekapadaa aasuree paṅktiḥ, **svarah** pañchamah.

**1. praaṇaapaanau mṛityormaa paatan svaahaa.**

Atharva 2:3:16:1

praaṇa-apaanau mṛityoḥ maa paatam svaahaa (su-aaha-aa).

**O airs that I (praaṇa) inhale and (apaanau) exhale! Please (paatam) protect (maa) me from (mṛityoḥ) death. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!**

In the second mantra the sage offers prayers for the strength in our hearing.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devate** dyaavaapṛithivee, **vowels** 14, **chhandah** ekapadaa aasury uṣhṇik, **svarah** ṛiṣhabhaḥ.

**2. dyaavaapṛithivee upashrutyaa maa paatan svaahaa.**

Atharva 2:3:16:2

dyaavaa-pṛithivee upashrutyaa maa paatam svaahaa.

**O directions and airs present between the (pṛithivee) earth and other (dyaavaa) celestial bodies! Please (paatam) protect (maa) me by (upa shrutyaa) strengthening my hearing. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!**

In the third mantra the sage offers prayers for the proper functioning of our eyes.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** sooryaḥ, **vowels** 10, **chhandah** ekapadaa aasuree triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

**3. soorya chakṣhuṣhaa maa paahi svaahaa.**

Atharva 2:3:16:3

soorya chakṣhuṣhaa maa paahi svaahaa.

**O (soorya) Sun! Please (paahi) protect (maa) me by (chakṣhuṣhaa) enabling my eyes to see with your light. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!**

In the fourth mantra the sage offers prayers for the proper functioning of all of our sensory organs.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** agniḥ, **vowels** 15, **chhandah** dvipadaa aasuree gaayatree, **svarah** ṣhadjaḥ.

**4. agne vaishvaanara vishvairmaa devaiḥ paahi svaahaa.**

Atharva 2:3:16:4

agne vaishvaanara vishvaiḥ maa devaiḥ paahi svaahaa.

हे (वैश्वानर) समस्त विश्व के जीवों के पालक (अग्ने) प्रकाशवान ईश्वर! मुझे (विश्वैः) सभी (देवैः) दिव्य गुण प्रदान कर (मा) मेरी (पाहि) रक्षा करो। मेरी सभी इन्द्रियों में क्रिया बनी रहे। यह (सु) शुभ (आह) वचन मेरी वाणी में (आ) सदा बना रहे।

पाँचवे मन्त्र में हमारे शरीर के पोषण के लिए प्रार्थना है।

ब्रह्मा ऋषिः। विश्वम्भरो देवता। १५ अक्षराणि। द्विपदाऽऽसुरी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

**विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि स्वाहा ॥५॥**

अथर्व २:३:१६:५

विश्वम्भर। विश्वेन। मा। भरसा। पाहि। स्वाहा ॥५॥

हे (विश्वम्भर) विश्व का भरण पोषण करनेवाले परमेश्वर! (विश्वेन) सम्पूर्ण (भरसा) भरण पोषण द्वारा (मा) मेरी (पाहि) रक्षा करें। यह (सु) शुभ (आह) वचन मेरी वाणी में (आ) सदा बना रहे।

## Atharvaveda - Prapaathaka 3, Kaanda 2, Anuvaaka 3, Sookta 16

**O (vaishvaanara) Sustainer of all life! O (agne) Radiant light of knowledge! Please (paahi) protect (maa) me by keeping (vishvaiḥ) all my (devaiḥ) sensory organs functional throughout my lifetime. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!**

In the fifth mantra the sage offers prayers for the proper nourishment of all of us.

**ṛiṣhiḥ** brahmaa, **devataa** vishvambharaḥ, **vowels** 15, **chhandah** dvipadaa aasuree gaayatree, **svaraḥ** ṣhaḍjaḥ.

**5. vishvambhara vishvena maa bharasaa paahi svaahaa.**

Atharva 2:3:16:5

vishvambhara vishvena maa bharasaa paahi svaahaa.

**O (vishvambhara) Provider of all! Please (paahi) protect (maa) me by providing (vishvena) all of the (bharasaa) nourishment needed. May these (su) auspicious words (aa) always remain in my (aaha) speech!**